(पाश की कविता)

पुलिस के सिपाही से

मैं पीछे छोड़ आया हूं, समंदर रोती बहनें
किसी अनजान भय से, बाप की हिलती दाढ़ी
और सुखों का वर मांगती, बेहोश होती मासूम ममता को
मेरी खुरली पर बंधे, बेजुबान पशुओं को
कोई छाया में न बांधेगा, कोई पानी न देगा
और मेरे घर में कई दिन, शोक में चूल्हा न जलेगा

सिपाही बता, मैं तुम्हें भी, इतना खतरनाक लगता हूं
भाई सच बता, तुम्हें, मेरी छिली हुई चमड़ी
और मेरे मुंह से बहते लहू में, कुछ अपना नहीं लगता?

तुम लाख दुश्मन–कतारों में
बढ़–चढ़कर शेखियां बघार लो
तुम्हारे निद्रा–प्यासे नयन
और पथराया माथा
तुम्हारी फटी हुई निक्कर
और उसकी जेब में
तंबाकू की रच गई जहरीली गंध
तुम्हारी चुगली कर रहे हैं
गर नहीं सांझी तो बस अपनी
यह वर्दी ही नहीं सांझी
लेकिन तुम्हारे परिवार के दु:ख
आज भी मेरे साथ सांझे हैं

तुम्हारा बाप भी जब
सिर से चारे का गट्ठर फेंकता है
तो उसकी कसी हुई नसें भी
यही चाहती है
बुरे का सिर अब किसी भी क्षण
बस कुचल दिया जाए
तुम्हारे बच्चों को जब भाई
स्कूल का खर्च नहीं मिलता
तो तुम्हारी अर्द्धांगिनी का भी
सीना फट जाता है

तुम्हारी पी हुई रिश्वत
जब तुम्हारा अंतस जलाती है
तो तुम भी
हकूमत की सांस–नली बंद करना चाहते हो
जो कुछ ही वर्षों में खा गई है
तुम्हारी चंदन–जैसी देह
तुम्हारी ऋषियों–जैसी मनोवृति
और बरसाती हवा–जैसा
परिवार का लुभावना सुख

तुम लाख वर्दी की ओट में, मुझसे दूर खड़े रहो
लेकिन तुम्हारे भीतर की दुनिया
मेरी बाजू में बांह डाल रही है
हम जो बिना सम्हाले
आवारा रोगी बचपन को
आटे की तरह गूंथते रहे
किसी के लिए खतरा न बने
और वे जो हमारे सुख के बदले
बिकते रहे, नष्ट होते रहे
किसी के लिए चिंता न बने
तुम चाहे आज दुश्मनों के हाथ में
लाठी बन गए हो
पेट पर हाथ रखकर बताओ तो
कि हमारी जात को अब
किसी से और क्या खतरा है?
हम अब सिर्फ उनके लिए खतरा हैं
जिन्हें दुनिया में बस खतरा ही खतरा है

पेज 1 का शेष भाग

रेप केस खारिज करने का तय हुआ सौदा

विदित है कि पुलिस महकमे में इस तरह से जिमनियां बदलना अत्यधिक खतरनाक एवं जोखिम भरा काम समझा जाता है। पकड़े जाने अथवा फंस जाने पर कोई अफ़सर नहीं कहता कि यह सब मेरे आदेश से हुआ था। ऐसे में कड़ी सज़ा अकेले तफ़तीशी को ही भुगतनी होती है। लिहाजा इन हालात के मद्दे नज़र ए एस आई सुरेश ने ग़लत काम करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इसके बावजूद उस पर न केवल एस एच ओ बल्कि उच्चाधिकारी जिमनियां बदलने के लिये भारी दबाव बनाये हुए हैं।

यद्यपि विश्वास तो नहीं होता लेकिन भरोसेमंद सूत्र बताते हैं कि एस एच ओ व ए सी पी ने अपनी-अपनी जिमनी अखराज अर्थात् केस खारिज करने की कार्यवाही लिख दी है। लेकिन जब तक तफ़तीशी अधिकारी अपनी ज़िमनी नहीं बदलेगा तब तक उक्त अखराज जिमनियां बेकार हैं। समझा जा रहा है कि उक्त दोनों अधिकारियों ने एडवांस में अपनी ज़िमनियां लिख कर तफ़तीशी ए एस आई सुरेश को यह भरोसा दिलाने का प्रयास किया है कि उसका कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है जब उसके ऊपर के दोनों अधिकारी उसकी ज़िमनियों की तसदीक एडवांस में कर के दे रहे हैं। यह ड्रामा पिछले करीब एक डेढ माह से चल रहा है लेकिन सुरेश किसी भी कीमत पर ग़लत काम करने को राज़ी नहीं हो रहा है, बस इसी लिये यह बना बनाया काम अटका पड़ा है।

सर्वविदित है कि थानों व चौकियों में एफ आई आर तो बहुत बड़ी बात है, बिना रिश्वत के गुमशुदगी की रपट तक दर्ज नहीं होती। ऐसे में बलात्कार जैसे गंभीर और वह भी एकदम सच्चे मुकदमें को एस एच ओ व ए सी पी खारिज करने पर क्यों आमादा हैं? खोज बीन करने पर पता चला कि चंडीगढ में तैनात राज्य के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी से दोषी के पारिवारिक सम्बन्धों के चलते ऊपर से दबाव बनाया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद भीतरी जानकारी रखने वाले सूत्रों का मानना है कि इतना बड़ा ग़लत काम कोई भी छोटा बड़ा पुलिस अधिकारी किसी भी बड़े से बड़े दबाव में आ कर भी नहीं करता, हां ऊपरी इशारे के साथ-साथ बहुत मोटी रिश्वत मिले तो वे जरूर जोखिम उठाने को तैयार हो जाते हैं। वही सब इस मामले में भी हो रहा है।

रिश्वत के लेन-देन की कोई रसीद नहीं होती, न लेने वाला बताता है न देने वाला। इसके बावजूद इसका लेन-देन कभी छिपा भी नहीं रह सकता। इस मौजूदा मामले में दोषी एक बहुत ही धनाढ्य व्यक्ति है। वह जेल जाने व मुकदमे बाज़ी से बचने के लिये कुछ भी खर्च कर सकने की स्थिति में है। ऐसे में उसके द्वारा पुलिस को दी गयी करोड़ों रूपये की रिश्वत का जो चर्चा पुलिस महकमे में चल रहा है काफ़ी विश्वसनीय प्रतीत होता है। यहां समझने वाली बात यह भी है कि कानून जितना कड़ा होगा पुलिस के भाव भी उतने ऊंचे होंगे।

इस सारे मामले को समझने के बाद प्रश्न यह भी उठता है कि शहर के अति विद्वान एवं 'ईमानदार' पुलिस आयुक्त शत्रुजित कपूर क्या भूमिका निभा रहे हैं? यदि वे इस मामले से बेखबर हैं तो उनके इस पद पर बने रहने का क्या औचित्य है? और यदि लेन-देन में उनकी भी हिस्सेदारी है तो फ़िर ईमानदारी का लबादा क्यों ओढ़ रखा है? इसके अलावा यदि किसी ऊपरी दबाव में यह सब होने दे रहे हैं तो फ़िर इससे बड़ी शर्म की और कोई बात हो नहीं सकती। छोटे मोटे अधिकारी का दबाव में आ कर ग़लत काम करना तो किसी हद तक समझा जा सकता है, लेकिन इतने बड़े अधिकारी का दबाव में आना घोर निंदनीय है। इससे तो वे छोटे कर्मचारी कहीं ज़्यादा प्रशंसनीय हैं जो ऐसे दबावों का डट कर मुकाबला करते हैं।

विजिलैंस: घुस लेकर छोड़ता घुसखोर को

लेकिन जांच तो दूर फरीदाबाद में तैनात इन्सपेक्टर सुरेश कुमार, जिसे जांच सौंपी गई थी, ने शिकायतकर्ता को टेलिफोन करके बुलाया तथा उससे मामले को बन्द करने व सरपंच से सुलह करने को कहा शिकायतकर्ता ने सुलह करने तथा शिकायत वापिस लेने से मना कर दिया तथा इसकी शिकायत तात्कालीन एस पी विजिलैंस योगेन्द्र नेहरा से बाकायदा दिनांक 23.6.12 को लिखित में कर दी तथा टेलीफोन पर भी अपनी बात कही । लेकिन न तो कोई जांच हुई न ही इन्सपेक्टर के विरूद्ध कोई कार्रवाई की गई। इसी बीच शिकायत कर्ता को विजिलैंस के सूत्रों से पता चला कि उनके पड़ोसी गांव मितरौल का एक ए एस आई जो फरीदाबाद पुलिस में तैनात है उसने सरपंच व इन्सपेक्टर के बीच सौदा करवाया है। इसकी शिकायत, शिकायतकर्ता ने उस ए एस आई के परिजनों से भी की थी, कि वे क्यों भ्रष्टाचारी का साथ दे रहे हैं।

लगभग एक वर्ष बाद शिकायतकर्ता ने गुड़गाव आई जी कार्यालय में एक जिम्मेदार अधिकारी से शिकायत के बारे में पूछताछ की तो वहां से फ़िर शीघ्र जांच का आश्वासन मिला तथा कोई घूस का केस देने का अनुरोध भी किया गया। इस पर शिकायतकर्ता पंच ने उस अधिकारी को याद दिलाया कि उसने जो स्पष्ट व सबूत सहित शिकायत दी है उस पर तो कोई कार्रवाई हो नहीं रही है अगला केस ढूंढ रहे हो। इसके बाद शिकायतकर्ता व गांव के कुछ अन्य लोग जब विजिलैंस कार्यालय सैक्टर 17 फ़रीदाबाद मामले की जानकारी लेने पहुंचे तो मामला ही उल्टा पाया गया। मूल शिकायत जिसपर आई जी विजिलैंस की एन्ड्रोस्मैंट थी तथा उसके साथ जो सबूत दिये गये थे वे सारे दस्तावेज वहां की फाइल में थे ही नहीं, बल्कि एक अन्य फर्जी शिकायत किसी और के द्वारा लिखी गई व कुछ अन्य असम्बंध कागज उसके साथ लगे मिले। फर्जी शिकायत पर उस बिचौलिये ए एस आई का नाम व मोबाइल नम्बर भी लिखा मिला । शिकायतकर्ता व गांव के अन्य लोग सिर पकड़ कर बैठ गये। अब वे इसकी शिकायत पुलिस महानिदेशक विजिलैंस को कर रहे हैं जहां से भी उन्हें न्याय व स्वच्छ जांच की उममीद है लेकिन विस्वस्त सूत्रों से पता चला है चूंकि सरपंच कांग्रेस पार्टी का स्थानीय पदाधिकारी है अत: उसकी मदद पलवल का सर्वाधिक प्रभावशाली नेता कर रहा है इस लिये निष्पक्ष जांच हो सकेगी इसमें सन्देह है।

राहुल बाबा और कांग्रेस पार्टी

महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत की राजनीति में कांग्रेस पार्टी का विरोध करनेवाली कई छोटी-मोटी पार्टियों में भी खानदान की यह परम्परा विद्यमान है। किसी समय धुर कांग्रेस विरोधी रहे राम मनोहर लोहिया के शिष्य मुलायम सिंह ने उत्तरप देश के चुनाव में सफलता के बाद गद्दी अपने सुपुत्र अखिलेश यादव को सौंप दी है। अभी-अभी दिवंगत हुए बाला साहब ठाकरे ने भी अपनी जेबी पार्टी शिवसेना की कमान अपने सुपुत्र उद्धव ठाकरे को सौंपी। उन्होंने कहीं ज्यादा काबिल अपने भतीजे राज ठाकरे को भी अपने पुत्र पर तरजीह नहीं दी। नतीजतन राज ठाकरे को अलग पार्टी बनानी पड़ी। जम्मू-कश्मीर में इस समय नेशनल कांफ्रेस में शेख अब्दुला की तीसरी पीढ़ी गद्दी पर विराजमान है। इसके अलावा करूणानिधि तथा प्रकाश सिंह बादल इत्यादि अपने वारिसों को आगे बढ़ा रहे हैं।

भारत जैसे पिछड़े देशों में जहां पूंजीवादी जनतंत्र अपेक्षाकृत कमजोर है और जिस पर पुरानी संस्कृति का काफी दबाव है, इस तरह की वंश परंपरा कोई आश्चर्यजनक नहीं है। चुनावी जनतंत्र के ठीक केंद्र में यह वंशवाद यह दिखता है कि इन पूंजीवादी पार्टियों के भीतर जनतंत्र का किस कदर अभाव है। चुनावी जनतंत्र के केंद्र में इस जनतंत्र का अभाव इन पूंजीवादी जनतंत्रों के गंभीर अंतर्विरोधों का परिचायक है। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि 'वासतव में विद्यमान पूंजीवादी जनतंत्र' ऐसे ही भांति-भांति के अंतर्विरोध के साथ ही विद्यमान होता है। शुद्ध पूंजीवादी जनतंत्र तो महज पूंजीवादी प्रचारकों का प्रचार है।

कार्टून

मज़दूर मोर्चा

नियमित पढ़ने हेतु पाठकगण अपने हॉकर से संपर्क करें। जो हॉकर, आपके घरों में दैनिक अखबार डालते हैं, आपके आदेश पर मज़दूर मोर्चा भी डालेंगे। कोई दिक्कत हो तो दीक्षित न्यूज़ एजेंसी से 9811159238 पर संपर्क करें।

'मज़दूर मोर्चा' प्रिंटफोर्ट, नेहरू ग्राउंड पर भी उपलब्ध है।